

महिला सशक्तिकरण और नारीवाद : अन्या से अनन्या

खेमचन्द डीगवाल

गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा (राजस्थान)



शोध सारांश

सदियों से महिलाओं का जीवन संघर्षमय रहा है। आधुनिक युग में अपेक्षाकृत महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन संघर्ष अभी भी जारी है। इसमें से कुछ स्त्रियाँ अपने जीवन की चुनौतियों का सामना करते हुए, अनवरत संघर्ष करते हुए, अन्य स्त्रियों के लिए एक मिशाल कायम कर देती हैं। इन्हीं में से एक स्त्री है “प्रभा खेतान।” इस शोध पत्र में इनकी आत्मकथा ‘अन्या से अनन्या’ के माध्यम से इनके जीवन संघर्षों व सफलताओं का विश्लेषण करते हुए महिला सशक्तिकरण और नारीवाद के एक सशक्त उदाहरण के रूप में प्रभा खेतान के जीवन का गहन विश्लेषण किया गया है। इनका जीवन न केवल अन्य आधुनिक भारतीय महिलाओं के जीवन पर पर्याप्त प्रकाश डालता है, बल्कि यह अन्य स्त्रियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनकर भी उभरी है। पुरुष प्रधान समाज में एक अकेली स्त्री की सशक्त अस्मिता बनाने की हृदयस्पर्शी गाथा है ‘अन्या से अनन्या।’ इस शोध पत्र में इस आत्मकथा व इससे संबंधित अन्य शोध पत्रों का गहराई से विश्लेषण करके यह बताया गया है कि प्रभा खेतान की आत्मकथा “अन्या से अनन्या”, “महिला सशक्तिकरण और नारीवाद” की एक गाथा है।

संकेताक्षर—महिला सशक्तिकरण, नारीवाद, स्त्री विमर्श, स्त्री संघर्ष, आत्मकथा

प्रस्तावना

ये दो शब्द “महिला सशक्तिकरण” और “नारीवाद”, 21वीं शताब्दी में बार-बार प्रयोग में लाये जा रहे हैं, जैसे कि अन्य शब्दों पर उन्होंने अपना वर्चस्व सा स्थापित कर लिया हो। आखिर ऐसा क्या (निहित है इन शब्दों में) अर्थ है उन शब्दों का?

“महिला सशक्तिकरण” अर्थात् “महिलाओं को मजबूत/सशक्त बनाना” उन्हें इतना शक्तिशाली बनाना कि वे अपने जीवन से जुड़े सभी फैसले स्वयं ले सकें। दूसरे शब्दों में समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तिकरण है। विचारधारा “नारीवाद” भी दुनिया की आधी आबादी से जुड़ी हुई है जो जीवन के सभी आयामों में (राजनीतिक, आर्थिक, व्यक्तिगत एवं सामाजिक रूप से) महिलाओं के ‘समान अधिकारों’ को प्राप्त करने का लक्ष्य रखती है। यह स्त्री विमर्श की विचारधारा है। भारत

के संदर्भ में ये शब्द बेशक आधुनिक युग के (नवीन) हो सकते हैं, लेकिन स्त्री सशक्तिकरण, नारी सम्मान, नारी/स्त्री विमर्श की विचारधारा सदियों पुरानी हैं; भारतीय समाज में नारी जीवन, उसका अधिकार, स्थान, महत्त्व एवं अस्तित्व एक अद्भुत पहली है, जिसे समझने के लिए इतिहास की लंबी परंपरा की परतों को खोलना पड़ेगा। आर्य समाज के समय नारी का स्थान अत्यन्त सम्मानजनक व उत्कृष्ट श्रेणी का था, उसके बाद से, व्यवस्था धीरे-धीरे चरमराने लगी व मध्यकाल में मुस्लिम आगमन के बाद नारियों की स्थिति पतन की ओर बढ़ने लगी। जिस देश में नारी को देवताओं के समान पूजा जाने की संस्कृति है, वहीं पर उसे उपेक्षित, भयावह, पीड़ादायक, जिंदगी जीने को मजबूर किया जाता है। उस पर इतना अन्याय-अत्याचार किया जाता है, जिसे समझना और समझाना दोनों ही मुश्किल कार्य है। इस पुरुष सत्तात्मक

समाज ने हमेशा ही नारियों को अपने अहम् के तले दबाकर रखा है। जरा-सी आवाज बढ़ी, विद्रोही स्वर उभरा की उसके गाल पर कलंकनी-कुलनासिनी का तमाचा जड़ दिया जाता है। आधुनिक युग में नारियों पर अन्याय, अत्याचार, शोषण जारी है, लेकिन परिस्थितियाँ में थोड़ा सा बदलाव दृष्टिगत होता है। वर्तमान समय में नारियों ने देवियों के चोले को उतारना शुरू कर दिया है, पाँबदियों की जंजीरों को तोड़ने लगी है, अब वह भी पुरुषों के समान स्वतंत्रता, अधिकारों की जंग लड़ने लगी है, महिला सशक्तिकरण और नारीवाद को अपने साहसिक कार्यों से मूर्त रूप प्रदान करने लगी है।

आधुनिक युग की इन महिलाओं में “प्रभा खेतान” का नाम प्रमुख है। डॉ. प्रभा खेतान समकालीन महिला हिंदी उपन्यासकारों में अपने बहुआयामी सृजनशीलता की परिचायक लेखिका है। स्त्री जीवन संघर्ष इनके साहित्य का केन्द्र बिन्दु रहा है लेकिन “अन्या से अनन्या” जिसमें कि स्त्री स्वतंत्रता अधिकार स्त्री संघर्ष की त्रासदी को बड़ी अत्यन्त ईमानदारी और बेबसी से शब्दों में पिरोया गया है; यह “अन्या से अनन्या” कोई उपन्यास नहीं, बल्कि प्रभा जी स्वयं की आत्मकथा है। आत्मकथा का अर्थ है जीवन चरित्र, आपबीती, आत्मकहानी। आत्मकथा हिंदी साहित्य के गद्य विधा की एक ऐसी विधा होती है जिसमें लेखक स्वयं अपने जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को क्रमबद्ध तरीके से विवरण प्रस्तुत करते हुए लिखता है। जिस तरह साहित्य समाज का दर्पण होता है, उसी तरह आत्मकथा व्यक्ति के जीवन का दर्पण होता है। आत्मकथा व्यक्ति के जीवन का ही नहीं अपितु समय एवं परिवेश का भी ब्यौरा होता है। प्रभा जी ने अपनी आत्मकथा को उतनी ईमानदारी और साहस के साथ प्रस्तुत किया है, कि सम्पूर्ण साहित्य जगत में यह आत्मकथा सराही गयी। उन्होंने अपनी आत्मकथा में नारी संघर्ष की, नारी अस्मिता की, नारी अधिकारों का जो वर्णन किया है, वह सिर्फ प्रभाजी की पीड़ा या संघर्ष नहीं है, बल्कि समाज की उन सभी स्त्रियों की पीड़ा एवं संघर्ष की अभिव्यक्ति है, जिन्होंने भोगा है। प्रभा जी आधुनिक युग की उन महिलाओं में शुमार है, जिन्होंने महिला सशक्तिकरण और नारीवाद को मूर्त रूप प्रदान किया और भारत देश की सैकड़ों महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बनकर सामने आयी। इस पेपर में उनकी आत्मकथा “अन्या से अनन्या” के माध्यम से इसी पहलू को उजागर करने का एक प्रयास किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र एवं शोध प्रविधि

इस शोध पेपर का अध्ययन क्षेत्र “प्रभा खेतान” की आत्मकथा “अन्या से अनन्या” है। प्रभा जी की आत्मकथा का प्रकाशन पुस्तक के रूप में 2007 में हुआ था। सर्वप्रथम उनकी आत्मकथा का अध्ययन किया गया है व इस आत्मकथा से संबंधित अन्य शोध कार्यों, शोध प्रपत्रों का भी विश्लेषण किया गया है। शोध की सटीक, स्वीकृत प्रणाली से गुजरकर ही इस शोध पत्र को लिखा गया है।

शोध परिणाम

प्रभा खेतान का सामान्य परिचय—प्रभा खेतान का प्रसिद्ध कवयित्री, उपन्यासकार व्यवसायी, स्त्रीवादी चिंतक, समाज सेविका और साहित्यकार के रूप में जानी जाती रही है। प्रभा जी का जन्म 1 नवम्बर सन् 1942 में कलकत्ता के एक सम्पन्न मारवाड़ी परिवार में हुआ था। ये मूल रूप से बंगाली नहीं, बल्कि मारवाड़ी थे। इनके पूर्वज राजस्थान में चूरू जिले के सुजानगढ़ कस्बे के मूल निवासी थे। व्यापार के सिलसिले में खेतान परिवार पश्चिम बंगाल चला गया और बाद में यहीं (का हो गया) पर बस गया। प्रभा खेतान के पिता का नाम ‘लादुराम खेतान’ व माता का नाम ‘परनो देवी खेतान’ था। प्रभा जी जीवन पर्यन्त अविवाहित रही। उन्होंने एक विवाहित पुरुष (डॉ. सराफ) व पाँच बच्चों के पिता से प्रेम किया और उसे पूर्ण ईमानदारी से निभाया। प्रभा खेतान ने ग्यारहवीं ‘बालीगंज शिक्षा सदन’ से तथा उच्च शिक्षा प्रेसीडेंस कॉलेज, कलकत्ता (दर्शनशास्त्र में एम.ए.) से प्राप्त की। इन्होंने ‘ज्यों पाल सार्त्र का अस्तित्ववाद’ विषय पर कलकत्ता विश्वविद्यालय से ‘पीएच.डी.’ की उपाधि प्राप्त की। इसके अतिरिक्त, प्रभा खेतान ने लॉस एंजिल्स अमेरिका से ब्यूटी थैरेपी के पाठ्यक्रम (कोर्स) में डिप्लोमा भी किया। उन्होंने ब्यूटी थैरेपी का पालन व सन् 1966 में ‘फिगरेट’ नामक महिला स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना की। उन्होंने सन् 1976 से चमड़े तथा सिले-सिलाए वस्त्रों का निर्माण एवं निर्यात का बहुत अच्छा स्वयं का व्यापार प्रारम्भ किया। वे अपनी की कम्पनी ‘न्यू होराईजेन लिमिटेड’ की प्रबंध निदेशिका रही हैं तथा साथ ही 138 वर्ष पुरानी प्रतिष्ठित संस्था ‘कलकत्ता चेंबर ऑफ कॉमर्स’ की प्रथम महिला अध्यक्ष बनीं। अनेक संघर्षों के उपरान्त ही उन्हें सफलता मिली। प्रभा जी की मृत्यु 19 सितम्बर सन् 2008 में कोलकाता में हुई। प्रभा खेतान एक उत्कृष्ट लेखिका रही है। साहित्य और व्यवसाय प्रभा जी के जीवन रूपी सिक्के के दो पहलू रहे हैं।

साहित्य के क्षेत्र में उन्होंने सर्वप्रथम कविता के क्षेत्र में कदम रखा और उसके बाद प्रभाजी ने उपन्यास कहानी आत्मकथा, रिपोर्ताज, आलेख, साक्षात्कार आदि विधाओं में प्रशंसनीय कार्य किया। इनके कुछ प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ निम्नलिखित हैं—‘सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं’, कृष्ण धर्मा में कविता पाली आंधी, स्त्री-पक्ष, आओ पेपे घर-चलें, एड्स, अपने-अपने चेहरे (उपन्यास), अन्या से अनन्या (आत्मकथा), ‘भूकम्प’ एक कथा (रिपोर्ताज), प्रतिद्वंद्वी, मैं अब नहीं लौटूंगा, मिस मारिया (कहानी) आदि। इस प्रकार साहित्य के क्षेत्र में इनका उल्लेखनीय योगदान है।

नारी संघर्ष की त्रासदी—प्रभा खेतान की आत्मकथा ‘अन्या से अनन्या’ जिसका शाब्दिक अर्थ है ‘सामान्य से विशिष्ट’ है, यह ‘नारी संघर्ष की त्रासदी’ का भी एक दस्तावेज है। प्रभा खेतान ने जीवनभर स्त्री पहचान के लिए, स्त्री स्वाभिमान और स्त्री अधिकारों के लिए जिन-जिन संघर्षों को सामना किया, जिन मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक पीड़ाओं से वे गुजरी, उन सभी का बड़ी ईमानदारी और बेबाकी से वर्णन किया है। बचपन से ही प्रभा जी के जीवन में कठिनाइयों का दौर प्रारम्भ हो गया था। मात्र नौ वर्ष की उम्र में ही उनके पिता की मृत्यु हो गई। प्रभा जी अपने पिता की लाडली बेटी थी। पिता की मृत्यु के बाद वह प्रेम को तरसने लगी। वह अपने घर में पाँचवें नम्बर की बेटी थी। अपने गौरे माँ-बाप की काली, उम्र में बड़ी दिखने वाली लड़की थी, जिसे किसी चीज का सरार नहीं था। पिता की मृत्यु के बाद केवल उसकी दवाईयाँ थी जिससे उन्हें प्रेम मिला। उनकी माता उन्हें बात-बात पर प्रभा को डाँटा करती थी, कभी प्रभा को माँ का प्रेम नहीं मिला हस कारण प्रभा का बचपन अकेलेपन और एकांत में अधिक बीता। उनकी आत्मकथा में उन्हीं के शब्दों में—

“कैसा अनाथ बचपन था। अम्मा ने कभी मुझे गोद में लेकर नहीं चूमा। मैं चपचाप घंटों उनके कमरे के दरवाजे पर खड़ी रहती। शायद अम्मा मुझे भीतर बुला ले। शायद..... हाँ शायद अपनी रजाई में सुला ले। मगर नहीं एक शाश्वत दूरी बनी रही हमेशा हम दोनों के बीच। अम्मा मेरी बातों को समझ नहीं पाती थी।” (पृ.सं. 31/32)

बाल्यावस्था में ही उनके अपने भाई ने उनके साथ शारीरिक दुर्व्यवहार किया था। जब वे बड़ी होकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहती थी, उनके भाई ने कॉलेज फीस के पैसे देने से मना कर दिया। तब उन्होंने स्वयं बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर अपने

कॉलेज की परीक्षा पास की। इसके बाद अपनी आँखों के इलाज के दौरान प्रभा जी डॉ. सराफ से मिली, 18 से 20 वर्ष बढ़े थे, बल्कि वे विवाहित थे और पाँच बच्चों के पिता भी थे। वे प्रभा खेतान से विवाह नहीं कर सकते थे। डॉ. प्रभा ने गर्भपात भी करवाया और यह भी स्वीकार कर लिया कि वे भी प्रभा के लिए कोई फूलों के महल खड़े नहीं किए, उन्होंने भी आम पुरुषों की तरह उन्हें प्रभा का अपने अहम् के तले रखना चाहा। उनकी आने-जाने, कार्य करने, अन्य पुरुषों से बात करने पर रोक-टोक लगाने लगे, लेकिन प्रभा ने भी डटकर विरोध किया और अपनी अस्मिता को बचाए रखी। उनके इन सब निर्णयों का परिणाम यह हुआ, विशेषकर अविवाहित रहने और डॉ. सराफ से जीवनभर प्रेम निभाने का, कि आजीवन प्रभा खेतान को परिवार और समाज में उपेक्षा का दंश सहन करना पड़ा। प्रभा जी जीवन में कुछ करना चाहती थीं, कुछ बनना चाहती थीं, आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहती थी, इसलिए वे जीवन में इन सबके बावजूद आगे बढ़ती रही। डॉ. सराफ के कुछ पैसे की मदद से वे न्यूयार्क गईं। वो लॉस एंजिल्स गई जहाँ उन्होंने ब्यूटी थैरेपी का कोर्स किया तथा कुछ समय तक इसका व्यवसाय भी किया। नौकरी और व्यवसाय के सिलसिले में इन्होंने दुनिया के बहुत से शहरों का दौरा किया, अनेकों महत्वपूर्ण महिलाओं से भी मिली (आइलिन, कैथी) भारत आकर बाद में उन्होंने चमड़े का बड़ा व्यापार शुरू किया, तथा साथ में साहित्य लेखन भी करती रही। उन्होंने अत्यंत संघर्षों के पश्चात् जीवन में आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त की। उनका और सराफ का रिश्ता भी इतना अच्छा नहीं रहा, प्रभा जी को अनेक अपमानों को सहना पड़ा अपने इस रिश्ते से भी और समाज से भी। लेकिन लेखिका डटी रही और डॉक्टर साहब को नकारे बिना स्त्री जाति की जिंदगी में पुरुषों के अनावश्यक हस्तक्षेपों को नकारा।

सम्पूर्ण आत्मकथा (अन्या से अनन्या) में प्रभा जी न सिर्फ पुरुष सत्ता से लड़ीं, बल्कि साथ ही वह पतिव्रता, सती सावित्री महिलाओं से भी लड़ीं, जिनकी नजरों में वे पथभ्रष्ट और अपवित्र थी। और इन दो सत्ताओं के साथ उनकी अंदरूनी लड़ाई भी शुरू थी ‘अनन्या’ की। उन्हीं के शब्दों में “मैं वह अन्य थी जिसे निरंतर निर्मित किया जा रहा था। क्योंकि महज मरा होना पत्नीत्व नाम व संसार को चुनौती दे रहा था। ये बस पति-पत्नी के बीच” एक वह थी। “मन के कौनों में निर्मित इन भावनाओं पर भी आखिरकार लेखिका ने विजय प्राप्त कर

ली थी। इस तरह उनका सम्पूर्ण जीवन स्त्री/नारी संघर्ष की 'त्रासदी' को व्यक्त करता है।

महिला सशक्तिकरण और नारीवाद—प्रभा खेतान ने अपनी आत्मकथा में स्वयं के जिन नारी संघर्षों का वर्णन किया है और उनसे जिस प्रकार वो और अधिक निखर कर पाठकों के सामने अभिव्यक्त हुई है, वह महिला और सशक्तिकरण और नारीवाद का ही मूर्त रूप है। प्रभा खेतान ने अपने जीवन के हर मोड़ पर स्त्री, होने के नाते घोर संघर्षों का सामना करना पड़ा और वो उनसे डटकर लड़ी भी, विद्रोह किया और सम्पूर्ण नारीजगत के लिए अपनी पहचान को बनाये रखने के लिए, नारी संघर्षों के लिए, अथक संघर्षों से जूझकर सफलता का मुकाम हासिल करने के लिए एक बहुत सुंदर प्रेरणा स्रोत बन गयी है। उन्होंने ना सिर्फ साहित्य लेखन में नारी संघर्ष, नारी सशक्तिकरण, नारी विमर्श/नारीवाद पर लेखन किया बल्कि वे स्वयं भी अपने व्यक्तिगत जीवन में महिला सशक्तिकरण की मिशाल बनकर रही हैं। पुरुषसत्तात्मक समाज ने नारियों को हमेशा ही अपने स्वयं के जीवन की सहूलियत के हिसाब से सांचे में ढाला और नारियों ने उसे ही सहज स्वीकार कर लिया। स्त्रियों पर देवियों का ठप्पा लगाकर, उनको पुरुष समाज ने अपने अनुसार कार्य लिया। अन्याय-अत्याचार होते रहे, कुछ ही स्त्रियों ने विरोध किया, उनको दबा दिया गया। लेकिन आधुनिक युग में बहुत सी स्त्रियों ने अपने लैंगिक असमानता को दूर करने के लिए, अपनी अस्मिता को बचाए रखने के लिए विद्रोह प्रारम्भ कर दिया है और सशक्त महिलाओं के रूप में उभरी हैं। इन 'सशक्त महिलाओं' में 'प्रभा खेतान' का नाम साहित्य में अत्यंत प्रमुख है, जो जिंदगी भर इस पुरुष प्रधान समाज से लड़ती रही और अपनी एक नयी पहचान बनाकर 'महिला सशक्तिकरण' और 'नारीवाद' जैसे शब्दों को अपने जीवन में धरातल पर उतारा।

'अन्या से अनन्या' में उनकी जिंदगी इस तरह के उदाहरणों से भरी पड़ी है, जहाँ उन्होंने समाज में महिला की वर्तमान स्थिति पर ना सिर्फ आक्षेप किया है, बल्कि सशक्त विद्रोह व माँ बच्चे पैदा करती रही और प्रभा को ऐसी जिंदगी से दूर रहने की हिदायत दी। विरासत में विद्रोह और अन्याय को नकारने की उन्हें ताकत मिली। उन्हीं के शब्दों में "मुझे अम्मा की तरह नहीं होना, कभी नहीं। भाभी की घुटन भरी जिंदगी की नियति मैं कदापि स्वीकार नहीं कर सकती। मैं अपने जीवन को आंसुओं में नहीं बहा सकती। क्या एक बूंद आंसू में स्त्री

का सारा ब्रह्माण्ड समा जाए? क्यों? किसलिए? (पृ.सं. 45) स्त्री जीवन में भरे पारिवारिक दुःख-पीड़ा, त्याग और चुप्पी को पुरी आत्मकथा में नकारा है, प्रभा जी ने।"

उनका और डॉ. सराफ का रिश्ता भी इतना अच्छा नहीं रहा। उन्होंने डॉ. के प्रति अपने स्वयं के प्रेम को पूरी ईमानदारी के साथ 28 साल निभाया है, समाज को दंश व ताने सहने के बावजूद। लेकिन जब-जब सराफ ने उन्हें दबाकर रखना चाहा या समाज की सोच की ही तरह उनके साथ बर्ताव किया तब-तब उन्होंने विरोध किया। एक बार डॉक्टर साहब ने प्रभा खेतान के अन्य मर्दों से (काम के सिलसिले में भी) रोक-टोक लगाते हुये, ये तक कह दिया कि "रंडीखाना" खोल लो। प्रभा जी ने गुस्से में इस बात का विरोध करते हुये कहा कि "अब क्या एक स्वतंत्र औरत का यह अर्थ निकाल लिया जाए कि वह वेश्या का कार्य कर रही है?" इस तरह प्रभा जी ने एक सशक्त महिला बनकर रही।

इस आत्मकथा में स्त्री विमर्श की अनेक अभिव्यक्तियाँ भरी पड़ी हैं। प्रभा जी ने विवाह को 'एक ओवरवेटेड संसार है। कहकर नकारा, जो नारी को गुलाम बनाती है। स्त्री जीवन की विडम्बना उसका अकेलापन होता है। इस अकेलेपन की वजह होती है, प्रेम का अभाव, उपेक्षा का भाव, खालीपन आदि।' इस संदर्भ में लेखिका लिखती है—"हाँ टूटी हूँ, बार-बार टूटी हूँ, पर कहीं तो चोट के निशान नहीं... दुनिया के पैरों तले रौंदी गई, पर मैं मिट्टी के लोदे में परिवर्तित नहीं हो पाई। इस उम्र में भी एक पूरी की पूरी साबूत औरत हूँ, जो जिंदगी को झेल नहीं रही बल्कि हंसते हुए जी रही है जिसे अपनी उपलब्धियों पर नाज है। दोस्ती का हाथ बढ़ाकर जिसकी गर्म हथेलियाँ हर किसी को अपने करीब खींच लेती हैं।" अर्थात् प्रभा खेतान यह बताना चाहती है कि समाज ने मुझे भी अन्य स्त्रियों की तरह रौंदना चाहा, दबाकर रखना चाहा, लेकिन मैंने अपने जीवन में इतने संघर्षों के बावजूद आज वो मुकाम हासिल कर लिया है कि दोस्ती का हाथ बढ़ाकर मेरी उपलब्धियाँ गर्म हथेलियाँ के समान हर किसी को अपने करीब खींच लेती हैं, क्योंकि आज मेरे पास सब कुछ है और मुझे अपनी विशिष्टता पर नाज है। इस तरह से प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' स्त्री संघर्षों के साथ-साथ, उसके मजबूती से संघर्ष करने का महिला सशक्तिकरण और नारीवाद का एक दस्तावेज है।

प्रासंगिकता—साहित्य के संदर्भ में प्रासंगिकता का अर्थ है कि जो साहित्य एक समय पहले लिखा गया था, जो साहित्य

उस समय की परिस्थितियों के अनुसार लिखा गया था, वो आज भी समाज के लिये महत्वपूर्ण या अपरिहार्य है, वह आज भी समाज के अस्तित्व में योगदान देता है, अर्थात् उस साहित्य में निहित संदेश आज भी समाज के लिए (व्यक्तियों के लिए) सार्थक है।

प्रासंगिकता की इसी कसौटी पर प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' सार्थक सिद्ध होती है। यह स्त्री जीवन संघर्ष की गाथा है जिसमें बाल्यावस्था के अनाथ बचपन, बलात्कार, प्रेम और स्नेह का अभाव, परिवार और समाज से विद्रोह, भावनात्मक प्रेम, उच्च शिक्षा अर्जित करने की आकांक्षा प्रेम में अवविहित रहने का निर्णय, आर्थिक स्वतंत्रता की जिद आदि सम्मिलित है। प्रभा जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में पुरुष प्रधान समाज द्वारा स्त्रियों के लिए बनाये गये नियमों का विरोध किया, संघर्ष किया तथा उन सभी नियमों की बेड़ियां तोड़ी जो स्त्री अस्मिता पर कुठाराघात करते हैं, स्त्री को पुरुष के तले दबाये रखना चाहते हैं।

इस तरह से प्रभा खेतान ने अपने जीवन काल में जिन संघर्षों का सामना किया, जिस समाज से लड़ी वह आज भी स्त्रियों को सामने कुछ इसी प्रकार का ही। प्रभा खेतान ने स्वयं भी लिखा है कि यह संघर्ष उनका अकेली का नहीं, उनकी जैसी न जाने कितनी ही और लड़कियाँ/महिलाओं का है। प्रभा जी ने अपनी आत्मकथा में भी लिखा है कि हमारे समाज की स्त्रियों की दशा अच्छी नहीं जो आज भी लगभग वैसी ही है, हालांकि आज के समय में कुछ स्त्रियाँ प्रभा जी की ही तरह ही स्त्री अधिकारों की मांग करते हुए, संघर्ष करते हुए अपनी अलग पहचान बनाने में सफल हो रही हैं। लेकिन बहुतायत में हमारे समाज में आज भी स्त्रियों को पुरुषसत्तात्मक समाज के नियमों के दबाव में पुरुष अहं के तले दबाया जा रहा है, उनका शोषण किया जा रहा है। प्रभा खेतान ऐसी सभी महिलाओं के लिए महिला सशक्तिकरण और नारीवाद को मूर्त रूप देते हुए एक प्रेरक उदाहरण के रूप में उभरकर आयी हैं, अपनी इस आत्मकथा के माध्यम से अतः 'अन्या से अनन्या' आज भी प्रासंगिक है।

निष्कर्ष

'अन्या से अनन्या' प्रभा खेतान के जीवन संघर्षों की गाथा है। बचपन से लेकर अपने सम्पूर्ण जीवन में उन्होंने अनेकों

कठिनाइयों का सामना किया, बचपन में प्रेम ना मिलना, पिता का गुजर जाना, माँ से हमेशा ताने सुनना, उच्च शिक्षा के लिए संघर्ष करना, बंगाल में मारवाड़ी हाने का दंश झेलना, प्रेम में विवाह ना करने का निर्णय, अपनी अस्मिता को बनाये रखने के लिए, स्त्री अधिकारों के लिए पुरुषसत्तात्मक समाज से संघर्ष/विद्रोह करना, स्वयं का व्यापार खड़ा करना, आर्थिक स्वावलम्बी बनकर जीवन भर अकेले रहने का सफर आदि। लेकिन उन सभी संघर्षों के बावजूद वो मजबूती से खड़ी रही, उन्होंने उन सब ऊँचाइयों को छुआ जो वह अपने जीवन में प्राप्त करना चाहती थी। प्रभा जी ने न सिर्फ स्वयं का व्यापार खड़ा किया बल्कि साथ ही साथ उन्होंने समृद्ध व प्रशंसनीय साहित्य-लेखन भी किया। आज भी प्रभा जी की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' अनेकों भारतीय स्त्रियों के लिए प्रेरणा स्रोत का कार्य करती है, जिसमें उन्होंने नारी विमर्श/नारीवाद पर जोर दिया तथा स्वयं महिला सशक्तिकरण की मूर्त रूप बनकर सामने आई हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. खेतान, डॉ. प्रभा, अन्या से अनन्या, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2007.
2. परमार, रंजन, स्त्री संघर्ष का दस्तावेज, अन्या से अनन्या, रिसर्च गुरु, खण्ड-7, सितम्बर 2018, पृ.सं. 45-51.
3. शिंदे, डॉ. विजय, स्त्री अधिकार एवं स्वतंत्रता की पैरवी, रिसर्चगेट, संगोष्ठी पेपर, सिद्धेश्वर महाविद्यालय, माजलगांव बीड़, सितम्बर, 2013.
4. इग्नू विश्वविद्यालय, अन्या से अनन्या (प्रभा खेतान), अंतर्वस्तु और मूल्यांकन, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2021.
5. दुबे, प्रीति, स्त्री हिन्दी आत्मकथा-साहित्य : एक अनुशीलन (इक्कीसवीं सदी के विशेष संदर्भ में), शोध-प्रबन्ध, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.), 2019
6. शर्मा, पी.डी., महिला सशक्तिकरण और नारीवाद, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2017.
7. सिंह, अनिता, भारतीय नारीवादी रंगमंच का सौंदर्यशास्त्र, रूपकथा जर्नल, खंड 1, संख्या 2, 2009, पृ.सं. 38-52.
8. सुब्रमण्यम, लक्ष्मी, दबी हुई आवाजें : आधुनिक भारतीय रंगमंच में महिलाएँ, नई दिल्ली, शक्ति बुक्स, 2002.